https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

एन एल आर पी-१२ से संबंधित आवर्तक फीवर (बुखार, ज्वर)

के संस्करण 2016

2. मूल्यांकन/निदान और इलाज

2.1 इसका पता कैसे लगाते है ?

चिकित्सा (डॉक्टर) विशेषज्ञ को इस बीमारी का संदेह मरीज़ के शारीरिक जॉच के समय बताए गए लक्षण एवं उसके परिवार के चिकित्सा इतिहास से पता चलता है।
बीमारी के दौरान कई बार रक्त जॉच करने के बाद सूजन का पता चलता है। लेकिन आनुवंशिक विश्लेषण के बाद ही इस बात की पुष्टि की जा सकती है कि मरीज़ को यह बीमारी है यह ज़रूरी है क्योंकि कई अन्य बीमारियों में भी आवर्तक बुखार देखा जाता है खास कर सायरोपायरिन संबंधित आवधिक रोग में अनेक लक्षणों का समावेश।

2.2 परीक्षण का क्या महत्व है?

जैसे कि बताया जा चुका है प्रयोगशाला परीक्षण से एन एल आर पी-१२ से संबंधित आवर्तक बुखार का पता लगाना महत्वपूर्ण है। सी आर पी, पूर्ण रक्त गणना एवं सीरम एमाइलोइड ए प्रोटीन (एसएए) परीक्षण कराने से हमले से सूजन की तीव्रता का पता लगाया जा सकता है। बच्चों के लक्षण मुक्त हो जाने के बाद भी यह परीक्षण फिर कराते हैं ताकि देखा जा सके कि नतीजा सामान्य या लगभग सामान्य निकलता है या नहीं। आनुवंशिक परीक्षण के लिए भी कुछ मात्रा में रक्त की ज़रूरत होती है।

2.3 क्या इसका इलाज संभव है?

एन एल आर पी-१२ से संबंधित आवर्तक बुखार का कोई इलाज नहीं है। बीमारी के हमले को रोकने के लिए भी कोई इलाज नहीं है। लेकिन बीमारी के लक्षणों का इलाज करने से सूजन और दर्द को काफी हद तक दूर किया जा सकता है। सूजन घटाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली कुछ नई दवाइयों पर भी जॉच पड़ताल जारी है।

2.4 तो फिर इलाज क्या है ?

एन एल आर पी-१२ से संबंधित आवर्तक बुखार का इलाज कुछ एन एस ए आई डी से किया जा सकता है जैसे इंडोमेथासिन, कारटिकोस्टेराइड्स जैसे प्रडनिसलोन और कुछ जगहों पर अनाकिन्रा इन में से कोई भी दवाई बीमारी का पूर्ण रूप से इलाज करने में सार्थक नहीं हुई है लेकिन इनका सेवन करने से मरीज़ की हालत में कुछ सुधार अवश्य हुआ है।

2.5 इस दवा के सह-प्रभाव क्या हैं?
हर दवाई का मरीज़ पर बुरा प्रभाव अलग अलग होता है। एन एस ए आई डी से मरीज़ को सरदर्द पेट में छाले होना एवं गुर्दा क्षति होने की संभावना रहती है। कारटीकोस्टेराइड्स लेने से इनफेक्शन होने की संभावना बढ़ जाती है (कई गुना) इसके अलावा कारटीकोस्टेराइड्स के शरीर पर कई और दुष्प्रभाव हो सकते हैं।

2.6 यह इलाज कितने दिनों तक चलना चाहिए?
इलाज का जीवन पर्यन्त चलना ज़रूरी है। आम तौर पर पाया गया है कि मरीज़ के बढ़ते उम्र के साथ उसकी सामान्य प्रवृत्ति में सुधार आता है। जब बीमारी के सभी लक्षण पूरी तरह से खत्म हो जाएँ, उस समय इलाज को रोका जा सकता है।

2.7 किसी और गैर परम्परागत इलाज के बारे में क्या राय है?
ऐसे किसी किस्म के गैर परम्परागत इलाज के विषय पर कोई प्रकाशित रिपोर्ट नहीं है।

2.8 समय-समय पर किस तरह के परीक्षण जरूरी हैं?
जो बच्चे इस बीमारी से पीड़ित है, उन्हें वर्ष में दो बार अपने रक्त तथा मूत्र की जॉच जरूर करानी चाहिए।

2.9 यह बीमारी कितने दिन रहती है?
हालाकि यह बीमारी पूरी ज़िंदगी रहती है, लेकिन समय के साथ-साथ इसके लक्षणों की तीव्रता कम होती जाती है।

2.10 बहुत दिनों तक बीमारी रहने से क्या होता है?
एन एल आर पी-१२ से संबंधित आवर्तक बुखार आजीवन चलने वाली बीमारी है लेकिन बढ़ती उम्र के साथ इसके लक्षणों की तीव्रता में कमी पाई गई है। क्योंकि यह बीमारी बहुत ही कम लोगों में पाई जाती है, इसके दीर्घकालिक निदान के विषय में कुछ कहा नहीं गया है।